thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425 सृष्टि संवत् 1960853116
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2013-15 विक्रम संवत् 2072
दयानन्दाब्द 192
E-mail : aryapsharyana@gmail.com
Website : www.apsharyana.org

॥ ओ३म् ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र
दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : मा० रामपाल आर्य
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर
वर्ष : 11 अंक : 40 रोहतक, 21 मार्च, 2015 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

मानव जीवन की सफलता का रहस्य

❑ आचार्य भगवान्देव वेदालंकार

1. मनुष्य सबसे श्रेष्ठ प्राणी है—संसार में अनेक बहुमूल्य पदार्थ हैं। उनमें मानव जीवन ही सर्वश्रेष्ठ है। मानव परमात्मा की सर्वोत्तम रचना है। अनेक जन्मों के पश्चात् दुर्लभ मनुष्य योनि प्राप्त होती है। तुलसीदास जी ने इसकी श्रेष्ठता व महिमा इन शब्दों में कही है—

बड़े भाग मानुष तन पावा।
सुर दुर्लभ सद्ग्रन्थहिं गावा॥

भाग्यशाली को यह जीवन प्राप्त होता है। आत्मज्ञान और आत्मदर्शन इसी में सम्भव है। वही जीवन परमार्थ, धर्मार्थ व पुण्य-कर्म करने का आधार है। मनुष्य शरीर में ही भक्ति, पूजा, प्रार्थना, साधना, सेवा, शुभ-कार्य आदि हो सकते हैं। इसी जन्म की सफलता के द्वारा जीवन के चरम लक्ष्य मोक्ष तक पहुँचा जा सकता है। इस जीवन की प्राप्ति एक स्वर्णिम अवसर है। ऐसा सुनहरा मौका बार-बार नहीं मिलता। किसी कवि का यह कहना उचित ही है—

रात गंवाई सोय कर,
दिवस गंवायो खाय।
हीरा जन्म अमोल था,
कौड़ी बदले जाय॥

आम आदमी दुर्लभ मानव जीवन को खाने-पीने, सोने और विषय भोगों में ही गुजार देता है। जीवन को सीधा करते-करते ही जीवन खत्म हो जाता है। जीवन की सफलता की तैयारी करते-करते ही जीवन निकल जाता है। आज के इंसान ने जीवन का अर्थ समझा ही नहीं, जीवन को सफल बनाया ही नहीं। फिर भी हम देखते हैं कि जीवन के दो मुख्य पहलू हैं—एक सफल जीवन और दूसरा निष्फलता का जीवन। कुछ व्यक्ति अपने जीवन में सफल हो जाते हैं, लेकिन कुछ व्यक्ति अपने मनवोचित कमजोरी के कारण दूसरे की सफलताओं से दु:खी होते हैं। यों तो सुख और दु:ख मानव जीवन के साथ-साथ जुड़े रहते हैं।

2. सफलता शान्ति का कारण—जहाँ सफलता है, आत्म-सन्तोष है, शान्ति है, खुशी है, प्रसन्नता है, सुख समृद्धि है, वहाँ सुख है, आनन्द है। जहाँ निष्फलता है, कमजोरी है, ईर्ष्या है, द्वेष है, असन्तोष है, अभाव है, अन्याय है, अत्याचार है, वहीं परेशानी है, दु:ख है, अशान्ति है। मानव में कमजोरी है कि वह जीवन की सफलता के लिए उतना श्रम नहीं करता जितना उसे करना चाहिये। वह जहाँ दूसरे व्यक्ति को सफलता की ओर बढ़ता हुआ देखता है, वहीं वह अपनी अन्दर की छिपी हुई कमजोरी ईर्ष्या और द्वेष के कारण दु:खी होने लगता है। वह अपने मन की संकल्प शक्ति को भुला देता है। जल्दी निराशा के वशीभूत हो जाता है। मनुष्य को आशावादी होना चाहिए, निराशावादी नहीं। वेद में कहा है—**'तन्मे मनः शिवसंकल्पम् अस्तुः'** अर्थात् हमारा यह मन उत्तम व श्रेष्ठ विचारों वाला हो। कोई हमसे द्वेष न करे और हम भी किसी से द्वेष न करें।

3. सफलता के अनुभूत उपाय—इसमें कोई सन्देह नहीं है कि मानव जीवन विशेष जीवन यापन का एक उत्तम पहलू है। सभी मनुष्य चाहे वह स्त्री हो या पुरुष हो, युवा अथवा वृद्ध हो, कहीं न कहीं रहकर अपनी जीवन यात्रा को चलाने के लिए कुछ न कुछ करते हैं। किन्तु जीवन को सुखपूर्वक जीने की कला को शायद बहुत कम लोग जानते होंगे। हमारी इस वार्ता के माध्यम से जीवन में निराशा की ओर, असफलता से सफलता की ओर अग्रसर होने, किसी भी कार्य को शीघ्र और कुशलता से करने के सरल तरीके एवं अनुभूत उपायों पर प्रकाश डाला जा रहा है। जैसे—आज का कार्य कल पर न टालना-प्रतिदिन कार्य प्रतिदिन निपटा देने से ही जीवन में सफलता मिल सकती है। जिसने भी आज का काम कल पर टाला, समझो वह एक महत्त्वपूर्ण समय को खो चुका। हम किसी चीज का मूल्यांकन तब करते हैं, जब वह हमारे हाथों से निकल जाती है। माता-पिता की कीमत तब पता चलती है जब वे हमसे विदा हो जाते हैं। ऐसे ही जब जीवन खत्म हो जाता है तब हमें जीवन की कीमत पता चलती है और जीने का ढंग आता है। इसीलिए कहा है कि—

काल करे सो आज कर,
आज करे सो अब।
पल में परलै होयगी,
बहुरि करेगा कब॥

अर्थात् कल-कल की बात मत करो। मनुष्य के कल को कौन जानता है? कवि के शब्दों में—

आगाह अपनी मौत से,
कोई बशर नहीं।
सामान सौ बरस का,
पल की खबर नहीं॥

अर्थात् जीवन की सफलता के लिए समय का पालन करो। जीवन का एक-एक क्षण अमूल्य है। दुनिया में सबसे कीमती चीज समय है जो समय को पहचानते और उसकी कीमत करते हैं वे जीवन में आगे बढ़ जाते हैं।

सफल व्यक्तियों के गुणों को ग्रहण करें—सफलता सिर्फ एक संयोग नहीं है। एक व्यक्ति एक के बाद एक सफलता हासिल करता चला जाता है जबकि दूसरे लोग सिर्फ तैयारियों में लगे रहते हैं। सफलता और असफलता के विषय पर बहुत खोज हुई है। जब हम सफल व्यक्तियों की जीवनियों पर नजर डालते हैं तो पता चलता है कि सभी में नि:सन्देह मिलते-जुलते कुछ खास गुण हैं। सफलता हमेशा अपने निशान छोड़ जाती है और अगर हम इन निशानों को पहचान लें और सफल व्यक्तियों के गुणों को अपने जीवन में अपना लें, तो हम भी सफल हो जायेंगे फिर हमें दूसरों की सफलता से दु:खी होने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। असफलता सही मायनों में कुछ गलतियों को लगातार दोहराने का नतीजा है।

4. अपनी कमजोरियों को दूर करें—मनुष्य दूसरों की सफलता से दु:खी क्यों होता है? व्यक्ति में कुछ कमजोरियां बैठ जाती हैं जैसे-मिथ्या अहंकार, स्वाभिमान की कमी, सफलता-असफलता का डर, विचार पूर्वक भावी योजना का न होना, अपने मुख्य लक्ष्यों अथवा उद्देश्यों का न होना, समय के अनुसार जिन्दगी में बदलाव न लाना, समय के अनुसार जिन्दगी में बदलाव न लाना, समय पर कार्य न करना अथवा टालमटोल, निकम्मापन, उचित श्रम न करना, पारिवारिक जिम्मेदारियों का पालन न करना, आर्थिक असुरक्षा, धन की कमी, दिशाहीनता, रुपये-पैसों के लालच की वजह से दूर की न सोचना, सारा बोझ खुद उठाना, क्षमता से ज्यादा अपने आपको बान्धना, वचनबद्धता का न होना, उचित अनुभव न होना प्रशिक्षण की कमी का होना, दृढ़ता की कमी, अविश्वास का खोना इत्यादि कमजोरियों के कारण मनुष्य दूसरों की सफलता से दु:खी होता देखा गया है।

5. धन का भी जीवन में महत्त्व समझें—यद्यपि जीवन को सफल

क्रमशः पृष्ठ 7 पर....

thearyasamaj.org

गोमाता के सम्बन्ध में मुख्यमन्त्री के नाम पत्र

माननीय श्री मनोहरलाल खट्टर जी, सादर नमस्ते।

ईश्वरकृपयात्र कुशलं तत्रापि भवेत्।

समादरणीय जी, दिनांक 25 फरवरी 2015 के दैनिक जागरण समाचार पत्र में यह पढ़कर बड़ा आश्चर्य व कष्ट भी हुआ कि हरयाणा सरकार ने देशी गाय/भारतीय नस्ल की गाय के दूध में से पीलेपन को खत्म करने हेतु वैज्ञानिकों को प्रयोगशालाएं स्थापित करने के निर्देश दिये हैं। ऐसा करना उपरोक्त गायों के दूध के उपभोक्ताओं के साथ अत्याचार करना जैसा है। गाय के दूध को तो अमृत कहा जाता है—देखिये वेदों में और आयुर्वेद में। दूध तो भैंस व विदेशी गाय (जर्सी) का कहलाता है। इस पीलेपन को अंग्रेजी भाषा में 'कैरोटीन' अर्थात् 'कैरोटीनोइडज' कहते हैं। इसी पीलेपन के कारण ही तो गाय के दूध को दूध नहीं अमृत कहा जाता है, जब यह खत्म कर दिया जायेगा तो यह दूध कहलाएगा, अमृत नहीं कहलाएगा। देशी गाय को तो यह एक प्राकृतिक देन है क्या इसे खत्म करने का हमें अधिकार है?

इस कैरोटीन के कारण ही तो दूध, घी, मक्खन आदि सहज पचते हैं। यह कैलोस्ट्रोल को भी खत्म करने में बहुत अधिक सहायक है। इन्हीं कारणों से ही तो माँ के दूध और गाय के दूध में बहुत समानता है। दूध में जो विटामिन और प्रोटीन हैं—वे सभी इसी पीलेपन के कारण ही शरीर में सुरक्षित रहते हैं और लम्बे काल तक बने रहते हैं। भैंस के दूध में इन्हें सुरक्षित रखने का गुण नहीं है और यदि है भी तो न्यून है।

विस्तारभय के कारण इस विषय में अधिक न लिखते हुए सरकार से नम्र निवेदन है कि इस कार्य को शुरू करने से पूर्व आयुर्वेदाचार्यों व वैज्ञानिकों की गोष्ठी आयोजित की जाये तो अच्छा रहेगा। पीलेपन को खत्म न किया जाए ताकि गाय का दूध गुणकारी ही बना रहे।

सरकार को चाहिए तो यह था कि उपरोक्त गाय के गुणों व लाभों के विषय में जनता को पूर्ण जानकारी दे। राजा की बातों पर जनता जरूर ध्यान देती है। गाय के गुणों व लाभों के विषय में दूध उपभोक्ताओं को बहुत कम ज्ञान है। गाय का दूध पतला होना भी अपने आप में एक गुण है। इस पतलेपन को अन्यथा नहीं लेना चाहिए।

यदि सरकार सही मायने में देशी गाय/भारतीय नस्ल की गाय के प्रति श्रद्धा व विश्वास रखती है, हितैषी है, तो इसके गुणों व लाभों का प्रचार श्रद्धा व तन्मयता से करना चाहिए और शिक्षा में किसी एक श्रेणी के पाठ्यक्रम में देशी गाय/भारतीय नस्ल गाय के सम्बन्ध में एक विस्तृत विषय लगाना चाहिए, ताकि शिक्षा के दौरान बच्चों में इसके गुणों व लाभों के प्रति श्रद्धा बन जाये—गाय के प्रति सरकार के ये कार्य बहुत प्रशंसनीय होंगे। अधिक जानकारी हेतु प्रसिद्ध रिटायर्ड वैटर्नरी सर्जन डॉक्टर श्री रामस्वरूप जी जो अंग्रेजी शासन काल में गोरखपुर (उ.प्र.) में प्रसिद्ध पशु सर्जन थे। अंग्रेजी सरकार इन्हें बड़ा सम्मान देती थी। इनकी लिखी पुस्तक 'गोमाता वसुन्धरा' देखने का कष्ट कीजिएगा। गाय के विषय में पूज्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की लिखी 'गोकरुणानिधि' छोटी-सी पुस्तक देखिएगा। ऋग्वेद के मन्त्र 1.164.27 को देखिएगा। आजादी से पूर्व लाहौर के वैटर्नरी कॉलेज के प्रिंसिपल श्री कर्नल पीज की 'गोविज्ञान की शिक्षा' देखिएगा। डॉ. बर्नर मैकफेडन की पुस्तक 'मिरैकल ऑफ मिल्क' देखिएगा। पशु विशेषज्ञ स्वर्गीय ई.जे. ब्रुऐन को मैडिकल स्टोरों पर क्रय करते देखे गये हैं। इसकी बहुत अधिक कीमत उपभोक्ताओं को क्रय करने पर देनी पड़ती है। यह बहुत कीमती पदार्थ है जिसे सरकार खत्म करने जा रही है। क्या यह गाय के दूध उपभोक्ताओं के प्रति अन्याय नहीं है? हम सरकार के इस कदम का विरोध करते हैं। यदि इस योजना को स्थगित न किया गया तो निकट भविष्य में जन आन्दोलन की तैयारी प्रारम्भ की जाएगी। इसलिए इस पत्र के माध्यम से हम सरकार से नम्र निवेदन करते हैं कि वह इस विषय पर अपना पुनः विचार-विमर्श करे। इस योजना को स्थगित कर देना ही अच्छा रहेगा—गाय के दूध उपभोक्ताओं के लिए। सरकार तो सरकार ही है जो चाहे करे। यह लोगों की सरकार, लोगों के लिए और लोगों द्वारा ही है। हमें आशा है कि सरकार अपना विचार बदलेगी लोगों के स्वास्थ्य व गोमाता के वास्तविक गुणों का ध्यान रखते हुए।

विनीत : **वेदपाल आर्य, अध्यक्ष, सर्वकल्याण धर्मार्थ न्यास**
(पंजी.) पानीपत (हरयाणा) 94161-22289

भारत स्काऊट एण्ड गाईड की गतिविधियाँ

आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल जी.टी. रोड पानीपत में भारत स्काऊट एण्ड गाईड की गतिविधियाँ इस प्रकार रहीं—

17 मई से 23 मई 2014 तक एक विद्यार्थियों का दल तारादेवी (शिमला) में कैम्प के लिए गया था और भारत स्काऊट एण्ड गाईड के नियमों की जानकारी हासिल की गई। इसके पश्चात् 15 जून से 22 जून 2014 को विद्यालय की ओर से डी.पी.ई. जगदीश चहल को भारत स्काऊट एण्ड गाईड के प्रशिक्षण के लिए तारादेवी (शिमला) भेजा गया।

इसके पश्चात् 26 जुलाई 2014 को हरियाणा के राज्यपाल द्वारा विद्यालय के दो छात्र स्काऊटक आर्यन और स्काऊट आदित्य को राज्यपाल भवन सम्मानित किया गया।

28 जुलाई 2014 को भारत स्काऊट एण्ड गाईड द्वारा विद्यालय के खेल के मैदान में पौधारोपण किया गया।

22 अगस्त 2014 के विद्यालय के भारत स्काऊट एण्ड गाईड द्वारा नशे के खिलाफ एक विशाल शोभायात्रा निकाली गई।

5 सितम्बर 2014 के भारत स्काऊट एण्ड गाईड द्वारा विद्यालय में विद्यार्थियों और अध्यापक के मुख्य कर्त्तव्यों पर प्रकाश डाला गया इसमें मुख्य अतिथि जिला भारत स्काऊट एण्ड गाईड अध्यक्ष श्री धनपत जी और मुख्यवक्ता आचार्य अभय आर्य रहे।

1 नवम्बर 2014 को स्वच्छता अभियान चलाया और विद्यालय के आस-पास सफाई अभियान चलाया गया।

7 नवम्बर 2014 को विद्यालय के भारत स्काऊट एण्ड गाईड द्वारा सफाई अभियान चलाया गया जिसमें जिला शिक्षा अधिकारी श्री जयभगवान खटक ने हरी झण्डी देकर शहर में रवाना किया।

13 फरवरी 2015 को भारत स्काऊट एण्ड गाईड ने विद्यालय में श्रद्धानन्द वाटिका के पानी, खाद व निराई आदि का कार्य भी स्काऊट ने किया।

इस कार्य को पूर्ण करने के लिए विद्यालय के निदेशक आचार्य अभय आर्य जी व विद्यालय की प्रिंसिपल श्रीमती रेखा शर्मा जी, पी.टी.आई. श्री संदीप आर्य आदि का सहयोग रहा।

—जगदीश चहल डी.पी.ई., आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल, पानीपत

मुनि मुनीश्वरानन्द सरस्वती की पुण्यतिथि को प्रेरणा पर्व के रूप में मनाया गया

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में 8.3.15 को मुनिश्वरानन्द सरस्वती की पुण्यतिथि को प्रेरणा पर्व के रूप में मनाई गई। प्रात: 9 बजे आचार्य पं० रामस्वरूप शास्त्री मुख्य अधिष्ठाता गुरुकुल आर्यनगर के ब्रह्मत्व में यज्ञ किया गया। तीन दम्पतियों ने यजमान का स्थान ग्रहण किया। शास्त्री जी का आध्यात्मिक प्रवचन हुआ।

10 बजे श्री के.एल. खुराना की अध्यक्षता में एक सभा हुई। मुख्य अतिथि श्री एस.के. शर्मा महामन्त्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली थे। विशिष्ट अतिथि डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी थे। इस अवसर पर पं० रामजीलाल आर्य पूर्व सांसद का नागरिक अभिनन्दन किया गया। चौ० हरिसिंह सैनी व श्री जगदीश प्रसाद आर्य गुरेरा, स्वामी माधवानन्द, वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, श्री सत्यपाल आर्य भी मंच पर उपस्थित थे। मंच पर बैठे विद्वान् वक्ताओं ने मुनि मुनीश्वरानन्द के जीवन व कार्य पर प्रकाश डाला। प्रेरणादायक संस्मरण सुनाये। महर्षि स्वामी दयानन्द के जीवन व कार्य तथा आर्यसमाज के नेताओं को संगठित होने पर बल दिया। उपरोक्त विद्वानों को शॉल व स्मृतिचिह्न देकर सम्मानित किया गया।

पं० संदीप आर्य भजनोपदेशक के प्रेरणादायक भजन हुए। विद्यालय के आचार्य डॉ० प्रमोद योगार्थी ने मंच का संचालन किया। यज्ञशाला के पुन: निर्माण हेतु लोगों ने दिल खोलकर दान दिया। श्री कैलाश शास्त्री, श्री दलीपसिंह आर्य, अजय अहलनाबादी एडवोकेट आदि का व्यवस्था में विशेष सहयोग रहा। सैकड़ों नर-नारियों ने ऋषिलंगर में प्रीतिभोज किया।

—प्रमोद लाम्बा, हिसार

thearyasamaj.org

* ओ३म् *

शरण में

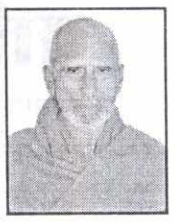

-: वेद-मन्त्र :-

यथा गौरो अपा कृतं तृष्यन्नेत्यवेरिणम्।
आपित्वे नः प्रपित्व तूयमा गहि कण्वेषु सु सचा पिब॥ 10॥ 252॥

(सामवेद)

प्रभु जीव से कहते हैं कि तू तो उसी प्रकार आनन्द को प्राप्त करने के लिए प्रकृति व प्राकृतिक पदार्थों में भटकता रहा यथा-गौरः (गुरी गुद्यमने) एक बार उद्योगशील मृग तृ-ष्यन्=प्यास से पीड़ित होता हुआ [अव=ईरिणाम्]=सुदूर ऊसर मरुभूमि को एति=प्राप्त होता है। मृग को वहाँ दूर पानी प्रतीत होता है उसको पाने के लिए वह उस सुदूर ऊसर भूमि की ओर दौड़ता है, परन्तु वहां उसके पहुँचने पर वह जल का दृश्य [अपाकृतम्]=और दूरी पर दिखने लगता है, आगे दौड़ने पर वह और दूर जाता है। इसी प्रकार इस अपाकृत ईरिण की ओर प्यास बुझाने की आशा में यह और भागता चला जाता है—ना ही वह पानी पाता है, न ही उसकी प्यास बुझती है। उसके उद्योग में संदेह नहीं, परन्तु वह व्यर्थ का श्रम उसे भ्रान्त करके समाप्त कर देता है और वह प्यास ही मर जाता है। इसी प्रकार मनुष्य भी अपनी आनन्द की प्यास को बुझाने के लिए धन की ओर चलता है। वह भी उसे कभी इच्छानुसार नहीं मिल पाता, उत्तरोत्तर धन की प्यास बढ़ती चलती है—'**अनुतर्षुल एवार्थः**'। और वस्तुतः धन में आनन्द का लाभ है भी तो नहीं। मनुष्य इसे भी जुटाता-जुटाता समाप्त हो जाता है और मृग की तरह प्यासा ही रहता है।

इस जीव को प्रभु कहते हैं कि तू [तूयम्]=शीघ्र ही [नः] [=हमारी] [आपित्वे]=मित्रता में ही नहीं, प्रपित्वे=हमारे प्रति समर्पण में आगहि=आजा। प्रकृति में आनन्द नहीं है वह तो आनन्द रूप स्नेह के लिए रेतीले प्रदेश के समान है। उसे छोड़कर तू मेरी ओर आ, मेरी मित्रता को स्वीकार कर, मेरे प्रति अपना अर्पण ही कर डाल। मेरी मित्रता में तू अपने आनन्द की प्यास को बुझा पायेगा। मेरे प्रति अपना अर्पण कर देने पर तो तेरे योगक्षेम का सब बोझ मेरे पर ही आ जायेगा, तू सब प्रकार की चिन्ताओं से मुक्त हो जायेगा। तेरा चिन्तामुक्त (निश्चिन्त) जीवन तेरे वास्तविक उल्लास का कारण बनेगा।

क्रमशः अगले अंक में.....

वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द द्वारा आयोजित
शहीदी समारोह

दिनांक 22 मार्च 2015 वार रविवार सायंकाल 3.00 बजे
स्थान-शिव चौक, झांज गेट, जीन्द

सभी नगर निवासी भाई-बहनों से सादर प्रार्थना है कि सम्वत्सर, राशि, कालगणना, ग्रहों की स्थिति आदि का सही वैज्ञानिक स्वरूप जानने के लिए तथा आर्यसमाज द्वारा किए गए पुनर्जागरण के ऐतिहासिक कार्य का परिचय प्राप्त करने के लिए एवं राष्ट्र के महान क्रान्तिकारियों की शहादत को याद करने के लिए आप इस समारोह में अवश्य पधारें।

आमंत्रित अतिथिगण, वक्ता एवं भजनोपदेशक—

आशीर्वाद-**आचार्य राजेन्द्र जी** (गुरुकुल कालवा, जीन्द), अध्यक्ष-**श्री यश मल्होत्रा** संरक्षक, भारत विकास परिषद्, गोहाना एवं पूर्वमंत्री आर्यसमाज गोहाना, मुख्य अतिथि-**श्री धर्मवीर जी दहिया** Xen. PWD सिरसा, मुख्य वक्ता-**डॉ० सुरेन्द्र कुमार,** कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उत्तराखण्ड), भजनोपदेशक-**श्री तेजवीर आर्य** की भजन मण्डली (पानीपत), संयोजक-**प्रो० ओमकुमार आर्य,** उपमंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा।

इस कार्यक्रम का शुभारम्भ वैदिक कन्या गुरुकुल ऐंचरा कलां की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत वेदपाठ से होगा तथा गुरुकुल की छात्राओं एवं कु० सुमेधार्या व कु० प्रतिभार्या के सुमधुर भजन भी होंगे। कृपया समय पर पधार कर अपना स्थान ग्रहण करें।

वेदप्रचार मण्डल, जिला जीन्द

सम्पर्क सूत्र-9416675810, 9416294347, 9466320288

क्यों अपनाएं सृष्टि संवत्?

❑ **प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक**

नव सृष्टि संवत् आरम्भ हो चुका है। हमें इसे अपनाना चाहिए। मैंने अपने मित्र आचार्य राजकुमार शास्त्री जी, जो आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल पानीपत में संस्कृत प्राध्यापक हैं, उनसे निवेदन किया कि विद्यालय के सूचना पट्ट पर नित्य प्रतिदिन सृष्टिसंवत् मास, तिथि-तिथिदेवता, नक्षत्र-नक्षत्र देवता के साथ अंकित करना चाहिए। कुछ दिन से वहाँ ऐसा हो रहा है और विश्वास है कि आगे भी होता रहेगा।

आचार्य अभय आर्य

सृष्टि संवत् अपनाने से मत-पन्थ का आग्रह भी समाप्त होता है। ईसा के जन्म दिवस से कालगणना अपनाकर ईसाई मत केआग्रह की ही तो पुष्टि होती है। मत-पंथ के ऐसे आग्रह हमें धार्मिक, ऐतिहासिक ग्रन्थों, घटनाओं के समय, औचित्य, यथार्थता के संदर्भ में ही संशय में डाल देते हैं। सृष्टिसंवत् अपनाने से न केवल ऐसे संशय मिटते हैं, अपितु पदार्थ विद्या, खगोल विद्या आदि का ज्ञान भी यथार्थ रूप में होता है जैसे सूर्य को बने कितना समय हुआ, किस नक्षत्र की क्या स्थिति है, इत्यादि संदर्भों में। पुरातत्त्व विदों को भी इस गणना से ही मदद मिल सकती है।

हम अपने दुराग्रह व भीरुता के कारण इस सृष्टिसंवत् को नहीं अपना पा रहे। ऐसे में अनेक विषयों को लेकर समय की गणना के सम्बन्ध मं हमारे दावे भारी वित्त और ऊर्जा की खर्च के बाद भी उलझे ही रहते हैं। हमारे मनीषी सृष्टि निर्माण के आरम्भ ही कालगणना करते आए। उनके पुरुषार्थ ने हमारे लिए इस विषय को कितना सरल बना दिया है। इस विषय के महत्त्व को देखते हुए ही ऋषि जी टके के लिए भी इसे बचाने के लिए पौराणिकों का यह कार्य अच्छा बताते हैं। इसी वैज्ञानिक गणना को अपना कर 'आयुर्वेद' ने वर्ष की छह ऋतुओं को दो-दो मास दिए हैं, जो वेद के आधार पर हैं।

चैत्र-वैशाख=वसन्त, ज्येष्ट-आषाढ़=ग्रीष्म, सावन-भादो=वर्षा, आश्विन-कार्त्तिक=शरद्, मार्गशीर्ष-पौष=हेमन्त, माघ-फाल्गुन=शिशिर। इस प्रकार की जानकारी से ही हम ऋतु अनुसार अपनी दिनचर्या, खान-पान अपनाकर स्वस्थ रह सकते हैं तथा भूमि में भी फसल आदि उगाने की सही व्यवस्था कर सकते हैं और भी कितने ही लाभ होंगे इस सृष्टिसंवत् को अपनाने के।

आजकल केन्द्र व हरयाणा में भाजपा सरकार है। शिक्षा में गीता पढ़ाये जाने की बात की जा रही है। कितना अच्छा हो यदि विद्यार्थियों को सृष्टिसंवत् की जानकारी मास, ऋतु आदि के अनुसार मिले तथा हमारी जीवनचर्या इसी के अनुसार हो। सरकार जहां हिन्दी-संस्कृत की बात कर रही है, वहीं डी.ए.वी., आर्यसमाज के अन्य शिक्षण संस्थान इनमें से अनेक अंग्रेजी में श्रेष्ठ बनने की प्रतिस्पर्धा में लगे हैं। यह एक तथ्य है कि व्यक्ति स्वयं पर विश्वास खोकर ही लुटता-पिटता है।

आर्यसमाज महेन्द्रगढ़ की ओर से शोक-सन्देश

बड़े दुःख के साथ लिखना पड़ रहा है कि एक होनहार, सच्चा देशसेवक व विशेष योग्यता रखने वाले डॉ. प्रशान्त शर्मा, बाल रोग विशेषज्ञ हमारे बीच नहीं रहे। डॉ. प्रशान्त शर्मा जी ने जीवनकाल के थोड़े से समय में ही प्रसिद्धि प्राप्त कर ली थी। डॉ. शर्मा एक होनहार, योग्यता से परिपूर्ण व्यक्तित्व के स्वामी थे। रोगियों से अत्यन्त स्नेह-भाव रखते थे। डॉ. साहब एक कर्मठ व मेहनती व्यक्ति रहे। अपने विषय में पारंगत थे। रोगियों का सही निदान तुरन्त कर देते थे।

आर्यसमाज महेन्द्रगढ़ के प्रांगण में सभी पदाधिकारियों ने मिलकर एक शोक-सभा का आयोजन किया जिसमें दो मिनट का मौन रखा गया व शान्ति यज्ञ के साथ ईश्वर से उनकी आत्मिक शान्ति की प्रार्थना की। डॉ. साहब के जीवन पर ये पंक्तियां सटीक बैठती हैं—

जब हम आए इस संसार में, जग हँसे तुम रोय।
ऐसी करनी कर चले, हम हँसे जग रोय॥
कोई काम करके जाना, दुनिया से जाने वाले।
मरते हैं रोज लाखों, बेकार खाने वाले॥

—स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, प्रधान आर्यसमाज महेन्द्रगढ़

thearyasamaj.org

जगद्गुरु दयानन्द के मानो तुम उपकार

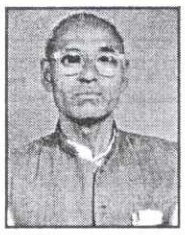

नरेन्द्र मोदी जी! सुनो, यदि चाहो उद्धार।
जगद्गुरु दयानन्द के, मानो तुम उपकार॥
मानो तुम उपकार, निराले थे वे स्वामी।
ईश्वर भक्त महान्, तपस्वी थे ऋषि नामी॥
दयावान, गुणवान, वेद विद्वान् निराले।
देशभक्त निर्भीक सत्यवादी मतवाले॥

ऋषियों का यह देश था, अंग्रेजों का दास।
भारत का सारा जगत्, करता था उपहास॥
करता था उपहास, दुःखी थे भारतवासी।
ऋषियों की सन्तान, यहाँ थी भूखी-प्यासी॥
देश भक्त निर्दोष, सुजन मारे जाते थे।
योगीपति विद्वान्, गुणी धक्के खाते थे॥

जगद्गुरु दयानन्द ने, जब देखा यह हाल।
दयासिंधु ऋषि को हुआ, सचमुच बड़ा मलाल॥
सचमुच बड़ा मलाल, चैन से कभी न सोए।
भारत की दुर्दशा देख-देख स्वामी जी रोए॥
किया वेदप्रचार, रात-दिन कष्ट उठाया।
करो परस्पर मेल, फूट को बुरा बताया॥

नाना साहब कुंवरसिंह, तांत्या टोपे वीर।
मंगल पाण्डेय वीरवर, तुलाराम रणधीर॥
तुलाराम रणधीर, सिंहनी लक्ष्मीबाई।
पंडित नन्दकिशोर, राव नाहर बलदाई॥
इन सबको ऋषि दयानन्द ने था समझाया।
देश-धर्म पर मिटो, गजब का पाठ पढ़ाया॥

श्रद्धानन्द अरु लाजपत, के थे गुरु महान्।
श्यामजीकृष्ण महादेव ने, ऋषि से पाया ज्ञान॥
ऋषि से पाया ज्ञान, शिष्य अर्जुनसिंह प्यारा।
जिसने निज परिवार, देश के ऊपर वारा॥
बिस्मिल शेखर खुदीराम ने, लड़ी लड़ाई।
राजगुरु, सुखदेव, भगत ने, फांसी खाई॥

अगर यहाँ आते नहीं दयानन्द ऋषिराज।
फिर कैसे बनता सुनो, पावन आर्यसमाज॥
पावन आर्यसमाज, सन्त की अमिट निशानी।
बलिदानों से लिखी है, जिसने त्याग कहानी॥
छुआ-छात का, ऊँच-नीच का, रोग मिटाया।
ललनाओं को वेद पठन, अधिकार दिलाया॥

नेताओं के पितामह, थे वे दया निधान।
क्रान्तिकारियों के गुरु, सर्व गुणों की खान॥
सर्व गुणों की खान, दर्शनों के थे ज्ञाता।
भारत माँ के तपःपूत, भारत निर्माता॥
वेद सभ्यता सदाचार के, सच्चे पालक।
युग निर्माता धर्मवीर थे, योगी नायक॥

जब तक हैं संसार में, सूरज पृथ्वी, चन्द।
अमर रहेंगे जगत में, तब तक ऋषि दयानन्द॥
तब तक ऋषि दयानन्द, देव पदवी पायेंगे।
ऋषिवर के गुणगान, जगत वासी गायेंगे॥
ऐसा त्यागी सन्त, न जग में अब तक आया।
जिसने पीकर जहर, वेद अमृत वर्षाया॥

नरेन्द्र मोदी जी! बन गए, तुम मन्त्री प्रधान।
गद्गुरु दयानन्द का, तुम मानो अहसान॥
प अहसान, बनो त्यागी तपधारी।
र चलो, बनो तुम परोपकारी॥
र्गवाद का, रोग मिटाओ।
समझो सुख पाओ॥
दीश को, तुम मत जाना भूल।
भय, वेदों के अनुकूल॥
सुख पाओगे।
गत् में हो जाओगे॥
, आपका हो जाएगा।
र, आपका यश गाएगा॥

., आर्यसदन बहीन, जनपद पलवल (हरयाणा)

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज औरंगाबाद मित्रौल (पलवल) का वार्षिक उत्सव दिनांक 27 फरवरी से 1 मार्च 2015 को बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ जिसमें भारतवर्ष के तपस्वी व मूर्धन्य संन्यासी आचार्य स्वदेश जी कुलपति संस्कृत विश्वविद्यालय वृन्दावन पधार कर समस्त आर्यजनता को सन्देश दिया कि सर्वप्रथम गृहस्थ आश्रम में परोपकार के कार्य करने तथा संगठित रहने और युवाओं को आगे लाकर कार्य सौंप देना चाहिए ताकि आर्यसमाज में युवा आ सकें। वेदों का संदेश तथा आर्यसमाज के संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती गोमत अलीगढ़ ने आध्यात्मिक प्रवचन में ईश्वर का सच्चा स्वरूप तथा आत्मा के रहस्य का संदेश देकर मानव जीवन को सफल बनाने पर प्रबल जोर दिया। भारतवर्ष के उच्चकोटि के वैदिक प्रवक्ता पं० उमेश कुलश्रेष्ठ आगरा ने वेदों में वर्णव्यवस्था, आश्रम व्यवस्था, महर्षि दयानन्द के उपकार, पाखण्ड से सम्बन्धित उदाहरण, जीवन को उन्नत बनाने का सन्देश देकर मार्मिक शब्दों से लाभान्वित किया।

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध भजन उपदेशक श्री सहदेव बेधड़क शिकोहपुर ने अपने मधुर व शिक्षाप्रद भजनों से महर्षि दयानन्द का सन्देश घर-घर तक पहुँचाने तथा महाराणा प्रताप की वीरता, राजा सूरजमल तथा महारानी किशोरी होडल की बहादुरी तथा सामाजिक बुराइयों पर सन्देश जनता को दिया। भारतवर्ष के गायक पं० केशवदेव राजस्थान ने अपने मधुर कण्ठ से गीत के द्वारा अंधविश्वास को दूर करने, स्वामी दयानन्द सरस्वती के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का ज्ञान सब तक पहुंचाने तथा उत्तम गृहस्थी बनने का संकेत दिया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनोपदेशक श्री चतरसिंह आर्य ने अपने गीतों के द्वारा भारतीय संस्कृति तथा महर्षि दयानन्द से सम्बन्धित विचार प्रकट किये। श्री सुन्दरसिंह आर्य तथा श्री बलराम आर्य ने भी अपने गीतों से आर्यजनता को लाभान्वित किया। श्री रणजीत सिंह ने भी समय-समय पर कवि रतनसिंह के गीत गाकर सन्देश दिया। आर्यसमाज का कार्यक्रम पूर्णतया सफल रहा। सभी आर्यसदस्यों ने सहयोग दिया। मंच का संचालन श्री डालचन्द आर्य प्रभाकर ने किया।

—वीरेन्द्रसिंह आर्य, मंत्री आर्यसमाज औरंगाबाद मित्रौल, जिला पलवल

आर्यसमाज औरंगाबाद मित्रौल का निर्वाचन

आर्यसमाज औरंगाबाद मित्रौल जिला पलवल का वार्षिक चुनाव आर्यसमाज मन्दिर में होली पर्व के यज्ञोपरान्त सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ जिसमें निम्न पदाधिकारी सर्वसम्मति से चुने गए—

प्रधान-श्री श्यामसिंह आर्य 'वेदनिपुण', उपप्रधान-श्री गिर्राजसिंह आर्य पंच, मंत्री-श्री वीरेन्द्रसिंह आर्य, उपमंत्री-श्री राजकुमार आर्य, कोषाध्यक्ष-श्री ठाकुरलाल आर्य, ऑडिटर-श्री धर्मवीर आर्य, पुस्तकाध्यक्ष-श्री नरेश आर्य, प्रचारमंत्री-श्री कवि रूपचन्द आर्य, संरक्षक-श्री तेजपाल (मट्ठर), श्री सुमरण पटवारी, श्री डालचन्द प्रभाकर, श्री प्रहलादसिंह आर्य, पं० अशोक पाराशर, श्री दयाराम आर्य।

—वीरेन्द्र आर्य, मंत्री

बृहद् यज्ञ व उपदेश सम्पन्न

(1) दिनांक 22 फरवरी 2015 को स्त्री आर्यसमाज मुरादपुर का उत्सव सम्पन्न हुआ। आर्यजगत् के वैदिक विद्वान् आचार्य वेदमित्र जी के सान्निध्य में प्रथम बृहद् यज्ञ हुआ। मुख्य यजमान श्रीमती वेदवती के अतिरिक्त सैकड़ों स्त्री व युवा बालिकाओं ने यज्ञ में आहुति प्रदान की। आचार्य जी ने माता की शिक्षा व संस्कार से मानव निर्माण की बात कही।

अनेक कन्याओं तथा आश्रम के छात्रों ने आसन तथा भाषण प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रिंसिपल श्री जगमेन्द्र जी ने आचार्य जी को सम्मानित किया।

(2) वैद्य धर्मपाल यज्ञ समिति खानपुर द्वारा कार्यक्रम 23 फरवरी 2015 को सम्पन्न हुआ। आचार्य जी द्वारा प्रथम बृहद् यज्ञ सम्पन्न हुआ। ट्रेनिंग ले रही अध्यापिकायें भी सम्मिलित हुईं।

आचार्य जी ने अध्यापकों के गुणों पर सारगर्भित वर्णन किया। वहीं अध्यापिकाओं ने यज्ञ व योग अपनाने का व्रत लिया। कार्यक्रम उपरान्त भोजन का प्रबन्ध किया गया।

thearyasamaj.org

सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी

भूमिका के प्रश्नोत्तर

❑ कन्हैयालाल आर्य, कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

गतांक से आगे....

प्रश्न-94. परमेश्वर को 'नित्य' क्यों कहते हैं ?

उत्तर-जो निश्चल, अविनाशी, सदा रहने वाला होने के कारण 'नित्य' है।

प्रश्न-95. परमेश्वर को 'शुद्ध' क्यों कहा है ?

उत्तर-जो स्वयं पवित्र, सब अशुद्धियों से पृथक् और सबको शुद्ध करने वाला है, इससे परमेश्वर का नाम 'शुद्ध' है।

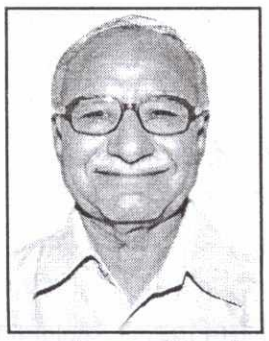

कन्हैयालाल जी आर्य

प्रश्न-96. परमेश्वर का नाम 'बुद्ध' क्यों है ?

उत्तर-जो सदा सबको जानने हारा है, इससे परमेश्वर का नाम 'बुद्ध' है।

प्रश्न-97. परमेश्वर को 'मुक्त' क्यों है ?

उत्तर-जो सर्वदा अशुद्धियों से अलग और सब मुमुक्षुओं को क्लेश से छुड़ा देता है, इससे परमेश्वर का नाम 'मुक्त' है।

प्रश्न-98. परमेश्वर को 'निराकार' क्यों कहते हैं ?

उत्तर-जिसका कोई आकार ही नहीं और न ही कोई शरीर धारण करता है, इसलिए परमेश्वर को 'निराकार' कहा गया है।

प्रश्न-99. परमेश्वर को 'निरंजन' क्यों कहा गया है ?

उत्तर-जो व्यक्ति अर्थात् आकृति, म्लेच्छाचार, दुष्ट कामना और चक्षु आदि इन्द्रियों के विषय से पृथक् है, इससे परमेश्वर का नाम 'निरंजन' है।

प्रश्न-100. परमेश्वर को 'गणेश' या 'गणपति' क्यों कहा गया है ?

उत्तर-जो प्रकृति आदि जड़ और सब प्रख्यात जीव आदि पदार्थों का स्वामी वा पालन करने हारा है, इससे उस परमेश्वर का नाम 'गणेश' व 'गणपति' है।

प्रश्न-101. परमेश्वर को 'विश्वेश्वर' क्यों कहा है ?

उत्तर-जो संसार का अधिष्ठाता (स्वामी) है, इससे उस परमेश्वर को 'विश्वेश्वर' कहा है।

प्रश्न-102. परमेश्वर को 'कूटस्थ' क्यों कहा है ?

उत्तर-जो सब व्यवहारों में व्याप्त और सब व्यवहारों का आधार होके भी किसी व्यवहार में अपने स्वरूप को नहीं बदलता, इससे परमेश्वर 'कूटस्थ' है।

प्रश्न-103. परमेश्वर को 'शक्ति' क्यों कहा है ?

उत्तर-जो सब जगत् को बनाने में समर्थ है, इसलिए उस परमेश्वर का नाम 'शक्ति' है।

प्रश्न-104. परमेश्वर को 'श्री' नाम से क्यों जाना जाता है ?

उत्तर-जिसका सेवन सब जगत्, विद्वान् और योगी जन करते हैं। इससे उस परमेश्वर का नाम 'श्री' है।

प्रश्न-105. परमेश्वर को 'लक्ष्मी' क्यों कहा है ?

उत्तर-जो सब चराचर जगत् को देखता, सब शोभाओं की शोभा है और जो वेदादि शास्त्र व धार्मिक विद्वानों, योगियों का लक्ष्य अर्थात् देखने योग्य है, इससे उस परमेश्वर का नाम 'लक्ष्मी' है।

प्रश्न-106. परमेश्वर को 'सरस्वती' क्यों कहा गया है ?

उत्तर-जिसको विविध विज्ञान अर्थात् शब्द-अर्थ-सम्बन्ध प्रयोग का ज्ञान यथावत् होवे, इससे उस परमेश्वर का नाम 'सरस्वती' है।

प्रश्न-107. परमेश्वर को 'सर्वशक्तिमान्' क्यों कहा है ?

उत्तर-जो अपने कार्य में किसी अन्य की सहायता की इच्छा नहीं करता, अपने ही सामर्थ्य से सब काम पूरा करता है, इससे परमेश्वर 'सर्वशक्तिमान्' है।

प्रश्न-108. परमेश्वर को 'न्यायकारी' क्यों कहा है ?

उत्तर-जिसका न्याय अर्थात् पक्षपात रहित धर्म करने का ही स्वभाव है, इससे उस परमेश्वर का नाम 'न्यायकारी' है।

प्रश्न-109. परमेश्वर को 'दयालु' क्यों कहा है ?

उत्तर-जो अभय का दाता, सत्यासत्य सर्व विद्याओं का जानने, सब सज्जनों की रक्षा करने और दुष्टों को यथायोग्य दण्ड देने वाला है इससे उस परमेश्वर का नाम 'दयालु' है।

प्रश्न-110. परमेश्वर को 'अद्वैत' क्यों है ?

उत्तर-दूसरे स्वजातीय ईश्वर, विजातीय ईश्वर वा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक परमेश्वर है, इससे वह 'अद्वैत' है।

प्रश्न-111. परमेश्वर का नाम 'निर्गुण' क्यों कहा है ?

उत्तर-जो शब्द, स्पर्श, रूपादि गुण रहित है, इससे परमेश्वर का नाम 'निर्गुण' है।

प्रश्न-112. परमेश्वर को 'सगुण' क्यों कहते हैं ?

उत्तर-जो सब का ज्ञान, सर्वसुख, पवित्रता, अनन्त बलादि से युक्त है, इसलिए परमेश्वर का नाम 'सगुण' है।

प्रश्न-113. परमेश्वर को 'निर्गुण' और 'सगुण' दोनों कहने क्या कारण है ?

उत्तर-जैसे पृथिवी गन्धादि गुणों से 'सगुण' और इच्छादि गुणों से रहित होने से 'निर्गुण' है, वैसे जगत् और जीव के गुणों से पृथक् होने से परमेश्वर निर्गुण और सर्वज्ञता आदि गुणों से सहित होने से 'सगुण' है। जैसे चेतन के गुणों से पृथक् होने से जड़ पदार्थ 'निर्गुण' और अपने गुणों से सहित होने से 'सगुण' और इच्छादि अपने गुणों से सहित होने से सगुण है। ऐसे ही परमेश्वर में भी समझना चाहिए।

प्रश्न-114. परमेश्वर को 'अन्तर्यामी' क्यों कहा है ?

उत्तर-जो सब प्राणी और अप्राणी रूप जगत् के भीतर व्यापक होकर सबका नियमन करता है, इसलिए उस परमेश्वर का नाम 'अन्तर्यामी' है।

क्रमशः अगले अंक में.....

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज शेखपुरा खालसा, निकट घरोण्डा जिला करनाल	20 से 22 मार्च 2015
2.	आर्यसमाज लाडवा जिला कुरुक्षेत्र	21 से 22 मार्च 2015
3.	आर्यसमाज न्यू पालम विहार, फेस-1, गुड़गांव	21 से 22 मार्च 2015
4.	आर्यसमाज डोहला जिला जीन्द	20 से 22 मार्च 2015
5.	आर्यसमाज मोहदीनपुर जिला रेवाड़ी	25 से 26 अप्रैल 2015
6.	आर्यसमाज भुरथला जिला रेवाड़ी	9 से 10 मई 2015

—सभामन्त्री

ओ३म्
(प्राचीन व आधुनिक शिक्षा का उत्तम सामंजस्य केन्द्र)
गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत, रोहतक (हरियाणा)
GURUKUL BHAIYAPUR LADHOT, ROHTAK
(Affiliated with C.B.S.E. New Delhi Code No. 531114)
प्रवेश प्रारम्भ
सीटें सीमित हैं
गुरुकुल में उपलब्ध सुविधाएं एवं आवश्यक निर्देश
★ लिखित परीक्षा द्वारा 6 अप्रैल को मैरिट के आधार पर प्रवेश। नियमावली उपलब्ध है।
★ प्रविष्ट छात्रों का हॉस्टल में रहना आवश्यक है।
★ संध्या-हवन, योगासन, प्राणायाम खेल समन्वित नियमित दिनचर्या और धर्म शिक्षा द्वारा संस्कारित वातावरण।
★ सी.बी.एस.ई. बोर्ड नई दिल्ली से मान्यता प्राप्त (मान्यता क्रमांक 531114) है।
★ इंग्लिश मीडियम (अंग्रेजी माध्यम)।
★ 10+1, 10+2 में आर्ट, कॉमर्स तथा नॉन मेडिकल संकाय।
★ आर्मी, नेवी तथा एयरफोर्स के लिए भर्ती में प्रशिक्षण।
★ सी.सी.टी.वी. कैमरों की व्यवस्था।
★ पुस्तकालय, वाचनालय, कम्प्यूटर तथा विज्ञान की आधुनिक प्रयोगशालाएं।
★ इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स के लिए भाषा प्रयोगशाला।
★ शुद्ध जल का निजी प्रबन्ध।
★ संस्था में स्थापित पं० रामप्रसाद बिस्मिल खेल अकादमी के माध्यम से खेल प्रशिक्षण। प्रशिक्षित कोचों एवं अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ियों द्वारा समय-समय पर दिशा निर्देश।
★ शुद्ध दूध के लिए निजी गोशाला।
★ 6 एकड़ का स्वच्छ तथा रमणीय परिसर।
★ स्टेशनरी तथा खाद्य पदार्थों के लिए कैन्टीन तथा वस्तु भण्डार की सुविधा।
3 K.M. STONE FROM BUS STAND, LADHOT ROAD, ROHTAK (HARYANA)
Contact : 01262-217550, 09992403892, 09467240298, 09416629972

thearyasamaj.org

आर्यसमाज के नियमों का एक अनुशीलन

❑ भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य

हमारा यह सौभाग्य है कि हमने ऐसी धरा पर जन्म धारण किया है, जिसे शास्त्र पुकार-पुकार कर वसुधा, वसुन्धरा, रत्नगर्भा कह रहे हैं, जो कि जीवन निर्वाह के शतश: पदार्थों से परिपूर्ण है।

हिन्दी भाषा के प्रतिष्ठित कवि श्रीधर पाठक ने 'जगत् सच्चाई सार' नामक कविता में क्या ही मार्मिक कहा है—

परम पवित्र पावनी पृथिवी,
भरी सकल सुघराई से।
पद-पद पर शोभा से छाई,
ईश्वर की चतुराई से॥
अति अमोल रत्नों की जननी,
सब द्रव्यों की माता है।
सदा सुधारस भरी खरी,
ये सब प्रकार सुखदाता है॥
सब जीवों की भौतिक काया,
इससे पोषण पाती है।
तुमसे पृथिवी से, मिट्टी से है,
बस इतना ही सम्बन्ध।
काम तुम्हारे आती है,
वह सुन्दर यह प्रकृति निबन्ध॥

हमारे सौभाग्य का दूसरा आधार—

इस धरती पर तो लाखों प्राणी अपने जीवन कलाप को पूर्ण कर रहे हैं। अत: इससे बढ़कर दूसरी बधाई पाठकों को इस बात की देता हूँ कि इस वसुन्धरा पर भी हमें साधारण शरीर प्राप्त नहीं हुआ, अपितु मानव चोला प्राप्त हुआ है। जो हर तरह से अन्य योनियों की अपेक्षा सर्वोत्कृष्ट है। तभी तो शास्त्रकार इसके गीत गाते नहीं थकते। इसको वेद देवानां पुरी अयोध्या तथा दैवी नाव बताते हैं, क्योंकि इस देह में विकास की सारी सुविधाएं जहां विद्यमान हैं और यह अनेक प्रकार के मौसम एवं स्थलों पर जीवित रह सकता है, वहाँ इसको बुद्धि रूपी ऐसा अनमोल रत्न मिला है कि जिसकी कोई तुलना नहीं। आज के वैज्ञानिक युग में बुद्धिजन्य एक से एक अद्भुत आविष्कार को देखकर व्यक्ति दंग ही रह जाता है। वस्तुत: इस

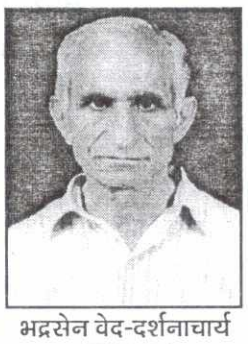

भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य

मानवीय शरीरयन्त्र के एक-एक अंग की अनुकृति से ही कैमरा, रेडियो आदि सारे आविष्कार आविष्कृत हुए हैं और इन सभी आविष्कारों का कर्त्ता यही मानव ही तो है।

पाठको! इसके साथ मैं आपको तीसरी बधाई इस बात की भी देता हूँ, अर्थात् हम सब का सौभाग्य है कि पृथिवी पर मानव चोले में आज हम ऐसे युग में विराजमान हैं, जिसमें विज्ञान का अद्वितीय विकास हो रहा है और भौतिक विज्ञान ने अपनी सुख-सुविधाओं से मानव जीवन का हर अंग और प्रत्येक क्षण उपकृत कर दिया है। सिर से लेकर एड़ी तक और प्रात: से रात्रि की पूर्णता तक मेरी और आपकी प्रत्येक वस्तु उससे उपकृत हो रही है अर्थात् मानव जीवन के हर पहलू में विज्ञान ने आमूलचूल परिवर्तन करके रख दिया है। आज जहां सड़कों, मकानों, आवागमन के साधनों, व्यवहार की वस्तुओं के रूपों और चिकित्सा के क्षेत्र में अनोखा परिवर्तन आ गया है, वहाँ आकाशवाणी, दूरदर्शन, दूरसन्देश, दूरभाष, दूरवीक्षण, अणुवीक्षण, ध्वनिविस्तारक, ग्रामोफोन, रेफ्रिजिरेटर, वातानुकित, कूलर, कम्प्यूटर आदि यन्त्र इनके गौरव को चार चांद लगा रहे हैं। पृथिवी से नियंत्रित चन्द्रयात्रा की सफलता और अन्तरिक्ष में दीर्घ समय के सफल वास ने तो मानव को आत्मविभोर ही कर दिया है। **क्रमश:**

शोक-समाचार

बड़े दु:ख के साथ सूचित किया जाता है कि आर्यसमाज महेन्द्रगढ़ के पूर्व प्रधान श्री रंगराव जी आर्य रिटायर्ड डी.डी.पी.ओ. साहब का देहावसान दिनांक 11 मार्च 2015 को 80 वर्ष की आयु में हो गया है जिनकी अन्त्येष्टि क्रिया पूर्ण वैदिक रीति से मन्त्रोच्चारण के साथ महेन्द्रगढ़ में की गई। उनकी शोक सभा दिनांक 23 मार्च को उनके निवास स्थान महेन्द्रगढ़ पर होगी। उन्होंने अपने कार्यकाल में महेन्द्रगढ़ आर्यसमाज के प्रांगण में एक बड़े सभागार का निर्माण करवाया तथा यादव धर्मशाला महेन्द्रगढ़ के निर्माण में पूर्ण सहयोग किया। अपने सेवा काल में पूर्ण निष्ठा व ईमानदारी से कार्य किया। सेवानिवृत्ति के बाद में आर्यसमाज का कार्य भी रुचि लेकर बड़ी सूझबूझ से आगे बढ़ाया। वे इलाके के प्रसिद्ध समाजसेवी थे उनके उत्कृष्ट कार्य को देखते हुए वेदप्रचार मण्डल, जिला महेन्द्रगढ़ द्वारा दौंगड़ा अहीर में जिले के वार्षिकोत्सव में सम्मानित किया गया। शॉल व प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया। उनके जाने से जिला महेन्द्रगढ़ के सभी आर्यसमाजियों को बड़ी ठेस पहुँची है। उनके जाने पर जो जगह खाली हुई है उसे भर पाना बहुत मुश्किल है।

—रोशनलाल आर्य प्रधान, वेदप्रचार मण्डल, जिला महेन्द्रगढ़

सूचना

आर्य प्रतिनिधि साप्ताहिक के सभी पाठकों एवं दानदाताओं को सूचित किया जाता है कि पत्रिका का वार्षिक शुल्क अथवा सभा को दान राशि भेजते समय मनीआर्डर कूपन पर भेजने वाले का पूरा पता न हीं लिखा होता जिसके कारण सभा कार्यालय को दानी की रसीद काटते समय बड़ी कठिनाई होती है। पता अधूरा होने के कारण न पत्रिका पहुँच पाती है न रसीद। आप सभी से अनुरोध किया जाता है कि मनीआर्डर द्वारा पत्रिका शुल्क अथवा दानराशि भेजते समय अपना डाक का पूरा पता एवं फोन नंबर अवश्य लिखकर भेजें।

व्यवस्थापक-'**आर्य प्रतिनिधि**' **साप्ताहिक,** दयानन्दमठ रोहतक

आत्मिक शांति के लिये शुद्धता से करें आह्वान
प्रसन्न हो आशीर्वाद देंगे भगवान
शुद्ध एम डी एच
हवन सामग्री

शुभ दिनों, शुभ कार्यों एवं पावन पर्वों में शुद्ध घी के साथ, शुद्ध जड़ी-बूटियों से निर्मित एम डी एच हवन सामग्री का प्रयोग कीजिये। शुद्धता में ही पवित्रता है। जहां पवित्रता है वहां भगवान का वास है, जो एम डी एच हवन सामग्री के प्रयोग से सहज ही उपलब्ध है।

अलौकिक सुगंधित अगरबत्तियां

महाशियां दी हट्टी लि०
एम डी एच हाउस, 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-15 फोन : 5937987, 5937341, 5939609
ब्रांचेज : • दिल्ली • गाजियाबाद • गुड़गांव • कानपुर • कलकत्ता • नागौर • अमृतसर

मै० कुलवन्त पिक्कल स्टोर, शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन.आई.टी., फरीदाबाद-121001 (हरि०)
मै० मेवाराम हंसराज, किराना मर्चेन्ट, रेलवे रोड, रिवाड़ी-123401 (हरि०)
मै० मोहनसिंह अवतारसिंह, पुरानी मण्डी, करनाल-132001 (हरि०)
मै० ओम्प्रकाश सुरिन्द्र कुमार, गुड़ मण्डी, पानीपत-132103 (हरि०)
मै० परमानन्द साईं दित्तामल, रेलवे रोड, रोहतक-124001 (हरि०)
मै० राजाराम रिक्खीराम, पुरानी अनाज मण्डी, कैथल-132027 (हरि०)

thearyasamaj.org

ओ३म्

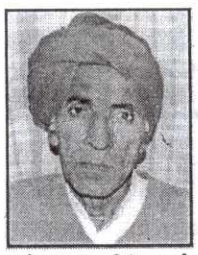

सूबे० करतारसिंह आर्य

ईश्वर को छोड़, पत्थर का करे सम्मान जो।
खुद बना पत्थर के टुकड़ों को, कहे भगवान् जो।
सिर झुका पत्थर से मांगे, ऐसे हैं इन्सान यह।
इनसे अच्छे जानवर, चूहे, बिल्ली हैवान यह।
जो समझते हैं यह पत्थर, है नहीं भगवान् यह।
पूजा का सब माल खायें, समझे बुत पाषाण यह।
बेधड़क उन पर चढ़ें, मूतें, करें अपमान यह।
जानवर होते हुए, उनकी अच्छी पहचान यह।
जड़ वस्तु के पूजकों से, इनका अच्छा ज्ञान यह।
कितनी मूर्ख हो चुकी, अब ऋषियों की सन्तान है।
देख अवस्था इनकी, **'सेवक'** हो रहा हैरान है।

मन नहीं जो हाथ में, है हाथ में माला तो क्या?
चित्तवृत्ति तो शुद्ध ना की, मनका घुमा डाला तो क्या?
हृदय वाणी कर्म में, अन्तर नहीं जब मिट सका,
प्रेम ईश्वर से नहीं, माथे को रंग डाला तो क्या?

(वास्तविक मनुष्य कौन है?)

सत्य के मार्ग पर जो भी चल रहे इन्सान हैं।
धर्म और बुद्धि की बातों पर जो रखते ध्यान हैं।
वेद के अनुकूल ही करते जो सारे काम हैं।
ईश्वर के स्थान पर पूजें ना जड़-पाषाण हैं।
धर्म और मजहब में जिनको फर्क की पहचान है।
असल क्या नकल क्या है, जिनको पूरा ज्ञान है।

(मूर्खता के कर्म)

भेद हैं जगदाता के न्यारे, समझें विरले भगत प्यारे।
जगत् को रूप अनूप बनाया, हर वस्तु में उसकी माया।
रम रहा पर नजर न आया, अद्भुत सुन्दर सभी नजारे। भेद.....
सुन प्राणी वह सब में बसा है, देख जरा आकाश में क्या है।
तेज उसी का चमक रहा है, अनेक सूरज चाँद सितारे। भेद.....
अज्ञानी जन समझ न पाये, पत्थर के ईश्वर बनाये।
वस्त्रा भूषण भी पहनाये, कई रंगों से खूब समारे। भेद.....
कभी सुलायें, कभी जगायें, खा न सकें पर भोग लगायें।
जड़ वस्तु पर शीश झुकायें, मूर्खता के कर्म यह सारे। भेद.....

—सूबेदार करतारसिंह आर्य, सेवक आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)

मानव जीवन की सफलता का... प्रथम पृष्ठ का शेष.....

बनाने के लिए अनेक सहायक तत्त्वों की आवश्यकता है। जैसे—शरीर को धारण करने वाला और पालन-पोषण करने वाला महत्त्वपूर्ण तत्त्व धन है। धन के अभाव में जीवन की गाड़ी चल नहीं सकती। धनोपार्जन मनुष्य का धर्म है।

श्री भर्तृहरि ने तो यहाँ तक घोषणा कर दी कि "धनवान् ही कुलीन है, धन-सम्पन्न व्यक्ति ही पण्डित है, विद्वान् है, गुणज्ञ और वक्ता है एवं रूपवान् है।" महाभारत के रचयिता महर्षि वेदव्यास ने तो यहाँ तक कह दिया—"**पुरुषोऽधनम् वधः**" धन का न होना मनुष्य की मृत्यु है। धन जीवन-विकास का साधन है, साध्य नहीं। धन से श्रेष्ठ और महत्त्वपूर्ण जो जीवन को धारण करता है वह है—स्वास्थ्य अर्थात् निरोगता।

6. स्वास्थ्य को स्थिर बनाने के लिए व्यायाम अवश्य करें—जीवन में स्वास्थ्य के महत्त्व को कौन नहीं अनुभव करता। छोटे से छोटा, बड़े से बड़ा, क्या अमीर, क्या गरीब, क्या स्वामी, क्या सेवक, क्या विद्वान्, क्या मूर्ख, सभी को रोग का अहसास होने पर स्वास्थ्य के महत्त्व की अनुभूति होती है किन्तु अल्पज्ञ मनुष्य धन, ऐश्वर्य, विद्वत्ता एवं बल आदि के मिथ्या अभिमान के नशे में स्वास्थ्य की अवहेलना करने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ता। आयुर्वेद के महान् आचार्य महर्षि चरक का कथन है—"**धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष** इन सबका मूल उत्तम स्वास्थ्य है।"

अत एव जहाँ जीवन में धन का बड़ा महत्त्व है वहाँ 'स्वास्थ्य' के अभाव में धन का महत्त्व भी नगण्य-सा प्रतीत होने लगता है।

7. जीवन—विकास के लिए अधिक महत्त्वपूर्ण एक और तत्त्व है जिसे 'आचरण या चरित्र' कहा जाता है। इसका सीधा सम्बन्ध 'मन' और 'आत्मा' से है। प्राय: देखा गया है कि चरित्र के अभाव में बड़े-बड़े 'धनधारी' समय आने पर विनाश के गर्त में गिरकर नरक भोगने लगते हैं। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए उत्तम आचरण होना आवश्यक है। उत्तम आचरण से मानव दु:खदायी पाप से बचा रहता है और वह जीवन को सफलता की ओर अग्रसर करता है।

8. श्रेष्ठता लाने का प्रयत्न अवश्य करें—सफलता की राह में कामयाबी हासिल करने के लिए हमें 'श्रेष्ठता' हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए। श्रेष्ठ होने की कोशिश करना ही तरक्की है। मनुष्य श्रेष्ठ कई प्रकार से हो सकता है। (1) उत्तम गुणों को धारण करने से। (2) उत्तम कर्म करने से। (3) उत्तम स्वभाव धारण करने से। (4) उत्तम आहार, भोजन सेवन करने से। जो शुद्ध शाकाहारी हो, जिस भोजन में मांस, अण्डा आदि का प्रयोग न हो। (5) 'ओ३म्' स्वरूप, सर्वरक्षक, सृष्टिकर्ता वाले अनन्त गुण सम्पन्न एक ही ईश्वर को मानने से व्यक्ति श्रेष्ठ हो सकता है।

9. मानव-जीवन का उद्देश्य समझें और उसे प्राप्त करने का प्रयास करें—मानव-जीवन की सफलता इस बात पर अधिक निर्भर करती है कि संसार में आकर, जीवन के उद्देश्य को गम्भीरता से समझें और उसे प्राप्त करने का प्रयास करें। भारतीय संस्कृति में वेद-शास्त्रों के अनुसार मानव जीवन का उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त करना माना है। वेदों के आचार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सन्ध्या-मन्त्रों के अन्तिम चरण में लिखा है—"**हे ईश्वर! दयानिधे! भवत् कृपयानेन जपोपासनादिकर्मणा धर्मार्थ काम मोक्षाणां सद्य: सिद्धिर्भवेन्न:॥**"

प्रस्तुत मन्त्र में भगवान् से प्रार्थना की गई है कि हे दया के भण्डार, महान् प्रभु! आपकी दया से, कृपा से आपके भक्तजन श्रेष्ठ कर्म जप, उपासना, योग साधना आदि कर्म करते हुए मानव जीवन के जो चार उत्तम फल हैं, (1. धर्म, 2. अर्थ, 3. काम और 4. मोक्ष) वे हमें इसी जीवन में अतिशीघ्र प्राप्त हों। किसी कवि ने सुन्दर कहा है—

"न प्रभु भूलो, न जग छोड़ो कर्म कर जिन्दगानी में।
रहो दुनिया में तुम ऐसे, रहे ज्यों कमल पानी में॥"

10. कर्मशील बनें, आलस्य-प्रमाद का त्याग करें—

मानव प्राणी को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए कर्मशील बनना है, उद्यम करना है, परिश्रमी बनना है। "**कर्म प्रधान विश्व रचि राखा। जो जस करे, सो तस फल चाखा॥**"

इस संसार में सारा कर्मों का ही तो खेल है। कुछ लोग अपनी कर्म कुशलता से जीवन के सर्वोत्तम फल मोक्षानन्द को भी पा लेते हैं लेकिन कुछ लोग अपने कुकर्मों से, अपने रूखे, कर्कश दुर्व्यवहार से निष्फलता की ओर चले जाते हैं।

अत: मानव जीवन की सफलता के रहस्य को समझें। मानव-जीवन को श्रेष्ठ बनायें, सुख और शान्ति के उपाय खोजें। सफल और आदर्श जीवन व्यतीत करने वाले व्यक्तियों से कुछ शिक्षा ग्रहण करें। अच्छे स्वास्थ्य के लिए व्यायाम अवश्य करें। अपने आचरण को, व्यवहार को एवं चरित्र को श्रेष्ठ बनायें। अपने जीवन के लक्ष्य प्राप्ति के लिए योग-साधना, ईश्वर का ध्यान, मनन, चिन्तन करें। धन का अर्जन, प्रयोग सावधानी से करें, धन सब कुछ नहीं है। इसलिए धन को दूसरों की सहायता में, यज्ञादि श्रेष्ठ कार्यों में, दान में प्रयोग करते हुए अपने जीवन को सुखी बनाने में धन का त्याग-वृत्ति से भोग करें। आज का कार्य कल पर न छोड़ें। प्रसिद्ध कहावत है—"**शुभं कार्यं शीघ्रं कुरु**" अर्थात् जिस कार्य का आप अच्छा मानते हैं, शुभ मानते हैं, उस कार्य को यथाशीघ्र आरम्भ कर देना चाहिए। अधिक समय तक नहीं टालना चाहिए। इन उपायों को अपनाने से निश्चय ही सफलता प्राप्त होगी।

कविवर प्रकाश की ये पंक्तियाँ हमें प्रेरणा देती हैं—"**बैठा क्यों हाथ पै हाथ धरे, मुखड़े पर छायी क्यों घोर उदासी। शक्ति निधान महान् है तू, यह जान करा न जहान में हाँसी। अन्तर तेरे प्रवाहित है सुख, स्त्रोत निरन्तर बारहमासी। व्याकुल तू फिर भी है प्रकाश। अचम्भा ये पानी में मीन है प्यासी॥**"

संपर्क-44ए, दूसरी मंजिल फेस-2,
विकास नगर, नई दिल्ली

thearyasamaj.org

स्वास्थ्य चर्चा....

प्राथमिक उपचार (First Aid)

आपातकाल टलने पर डॉक्टर की सलाह जरूरी है

(1) **बेहोश हाने पर**-कारण को पहचान कर उपचार करें, रोगी को साफ हवा में रखें, कपड़े ढीले कर दें, जूता उतार दें, आँखों पर अच्छी तरह ठण्डे पानी के छींटे लगायें। रोगी को उल्टा लिटाकर एक मिनट में सोलह बार कृत्रिम श्वास दें। कारण कई हो सकते हैं। जैसे—पेट गैस, दूषित हवा, खून की कमी, चोट, दिल का रोग, गर्मी, लू लगना, मिर्गी आदि दम घुटना, सदमा, जहर आदि से सर्पदंश से। पैर गर्म रक्खो।

(2) **चोट-मोच-चणक व जलने पर**-चणक को छोड़कर बाकी के लिए ठण्डे पानी की पट्टी करें-गिली रखें, चोट के साथ छेड़छाड़ न करें, किसी वृक्ष का फत्ता साफ करके बांध दें, खून रोक दें। जलने पर अंग को ठण्डे पानी में जलन मिटने तक रखें। जहरीले जानवर के काटने पर बिना खाद की मिट्टी का लेप आधा-आधा घण्टे पर करें।

(3) **तेज बुखार**-तेंज बुखार में सिर धो दें, अधिक ज्वर हो तो जोड़ों में भीगे ठण्डे कपड़े रखें। 102° आने पर यह उपचार ना दें। हाथ-पैर ठण्डे हों तो तलवों में जमाण (अजवायन) रगड़ें।

(4) **पेटदर्द**-पुदीने का पानी+प्याज का रस+नींबू रस मिलाकर दें या जल मिलाकर सिरका दो घूंट दें या चने के दाने के जितनी भुनी हींग दें। बच्चा हो तो मामूली पानी मिलाकर कच्ची हींग का नाभि पर लेप कर दें।

(5) कान दर्द में सूखी सेक करें। देशी गोमूत्र की एक-दो बूंद डाल दें फिर कान से निकाल दें। पानी चला गया तो कपड़े की बत्ती से निकाल दें।

(6) **छाती दर्द में**-तुलसी के चार पत्ते, अजवायन, एक चुटकी सौंठ, एक चुटकी गेहूँ छानस (चोकर), 5 ग्राम दूध डाल चाय की तरह पिलायें। छाती या पेट की जलन ठीक करने के लिए ठण्डा जल या ठण्डा मीठा दूध पिलायें। चाय, मिर्च, शराब बन्द करें।

(7) **दिल के दर्द**-रोगी को चित्त लिटा दें। अगर खा सके तो दो तुरी लहसुन या 30-40 मिली. प्याज का पानी दें, दिमागी तनाव से बचायें, पेट हल्का रहे। हृदय की धड़कन बन्द हुए 15 मिनट हुए हों तो तोला नींबू रस, 2 तोला शहद, 2 तोला पानी रोगी के पेट में पहुँचा दें। दिल दुबारा काम करने लगेगा ऐसा एक लेख है। अगर धड़कन ज्यादा रहती हो, मुरब्बा, सेब या आंवला सेब उत्तम है। बहिदाने का मुरब्बा इनमें से कोई एक दोनों समय धोकर भोजन से पहले दें।

(8) पेशाब की रुकावट में-अगर छोटा बच्चा हो और गर्मी हो तो ठण्डे जल में नाभि तक बिठा दें सर्दी हो गर्म जल में बिठा दें, नाभि के पास तथा कमर में बाम लगा दें या तैल में मिला अमृतधारा देने से तुरन्त पेशाब खुलेगा। बड़ा व्यक्ति हो तो पेडू पर ठण्डा पानी डालते रहें। केले के पौधे का रस पिलायें। गोखरू (भाखड़ी) का काढ़ा बना ठण्डा करके पिलायें या मूली का पानी निकालकर पिलायें। पथरी का शक हो तब कपड़े से गर्म जल की सेंक दें। गदूद (परोस्टेट ग्रन्थी) चैक करायें, गुर्दे चैक करायें, कब्ज हो दूर करें।

(9) **दमा-श्वास में राहत**-गर्म जल पिलायें, गर्म जल में पैरों को रखें, साफ हवा में रोगी को बिठा दें। छाती पीठ की सेक दें, कोई मीठी वस्तु मिश्री आदि चूसने को दें। अदरक, तुलसी, गेहूं के छानस को डाल मीठा मिलाकर उबाल छानकर पिलायें। गले में भांफारे दें। याद रहे ठण्डे जल से मुंह धोकर आंख बन्द करके सिर्फ दो या तीन मिनट ही दें।

(10) ज्यादा या कम ब्लडप्रेशर (B.P.) की शंका हो शरीर ढीला करके लेट जायें, ध्यान श्वास के आने जाने की तरफ रहे। कम की शंका हो तो शिर नीचा, ब्लडप्रेशर (B.P.) ज्यादा में शिर ऊँचा रहे पानी पिला दें।

(11) हाथ-पैर या कहीं भी साधारण दर्द होने पर-पांच-सात बार हाथों से सूखा ही रगड़ें। चार-पांच बार प्राणायाम या लम्बे गहरे सांस लें, तुरन्त बिना दवा फायदा होगा। अगर कन्धे-गर्दन में दर्द या अकड़न हो तब दोनों हाथों से गर्दन को दबाकर खोलो-बन्द करो।

(12) याद रहे किसी भी बीमारी में झाड़ा लगवाना, गण्डा, डोरी, ताबीज बांधना धोखा है। इसी प्रकार मंत्र-यंत्र पर भरोसा कर बैठना भी धोखा है। चणक, मोच तुड़वाने से और गुम चोट पर मालिश से बहुत नुकसान हो सकता है। इनमें शरीर के तन्तु कोशिकीय (सैल्ज) पहले ही टूटे रहते हैं। रगड़े मारने से और टूटकर सूजन आएगी। ताजी चोट-मोच पर केवल ठण्डे जल की पट्टी ही काम देगी। इस प्रकार नये तन्तु जल्दी बनेंगे। आसन-व्यायाम भी झटके लगाते हुए कभी ना करें। कोई भी आसन करें तीन सैकेण्ड लगने चाहिए। फिर श्वासन (शरीर को ढीला) जरूर करें। इस प्रकार दिमाग, दिल और शरीर के सब अंगों को लाभ होता है, तनाव घटता है।

(13) कांच-शीशा खाने पर गाय की दही या पके आलू खिलायें, ईसबगोल खिलायें, चावल खिलायें।

(14) लोहा खाने पर आँवला खिलाये-पिलायें, गल जाएगा।

(15) कहीं बन्ध बांधना पड़े तो 10-15 मिनट से ज्यादा देर तक एक जगह ना रहने दें।

—देवीसिंह आयु० चिकित्सक,
बुआना लाखू (पानीपत)
मो० 9996316318

भारत स्वाभिमान ट्रस्ट एवं पतञ्जलि योग समिति हिसार होली के रंग-योग के संग तथा वेदप्रचार किया

हिसार। दिनांक 6.3.2015 को फाग के दिन प्रात: मधुबन पार्क हिसार में योग कक्षा के बाद चन्दन तिलक एवं हर्बल गुलाल होली खेली गई। इस अवसर पर 60-70 नर-नारियों ने भाग लिया। वैदिक विद्वान् आचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी ने होली पर्व के महत्त्व पर प्रकाश डाला। संजय सिंगला व श्रीमती लक्ष्मी अग्रवाल, श्रीमती निर्मल अग्रवाल ने भजनों का कार्यक्रम रखा। ईशकुमार आर्य व महेन्द्रसिंह मलिक तथा डॉ. कमल गुप्ता विधायक ने भी अपने विचार रखे। मंच पर वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, डॉ० सत्या सांवत, डॉ. प्रवीन पूनिया, वीरसैन जैन, अनिल जैन आदि उपस्थित थे। हरीश लोहिया ने मंच का संचालन किया। सभी वक्ताओं ने सभ्य तरीके से होली मनाने का आह्वान किया। मधुबन पार्क के बाद अत्तरसिंह स्नेही, डॉ. प्रमोद योगार्थी ने सेठ सत्यप्रकाश मित्तल, श्री रामकुमार आर्य प्रधान, सीमा काठपाल, संयोगिता राजपाल, बृजभान मलिक एस.डी.ओ. हिसार, श्री कुलदीप सिंह दुहन, बलवीर सिंह आर्य के घरों में डॉ. प्रमोद ने वेदप्रचार किया तथा ईश्वरभक्ति के भजन रखे। सुखी रहने के लिए वेदमार्ग पर चलने का अनुरोध किया। **—रामकुमार आर्य, प्रधान**
वेदप्रचार मण्डल, हिसार

योग-ध्यान, साधना शिविर

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) ऊधमपुर, जम्मू में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक पूज्यपाद महात्मा चैतन्यमुनि जी के सान्निध्य में दिनांक 11 से 19 अप्रैल 2015 तक नि:शुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया है जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि कराए जायेंगे तथा योगदर्शन-पठन-पाठन की भी व्यवस्था है। शिविर में रोजड़, गुजरात से शिक्षित आचार्य श्री सन्दीप आर्य जी, प्रबुद्ध वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीय जी आदि अन्य अनेक विद्वान् भी पधार रहे हैं। डॉ० सुरेश जी योग द्वारा रोगोपचार भी करेंगे। इस अवसर पर पूज्य महात्मा जी के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया है। शिविर में साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। आश्रम में पूज्य महात्मा जी के सान्निध्य में पहले लगाए गए शिविरों में शिविरार्थियों के बहुत अच्छे अनुभव रहे हैं इसलिए साधकों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। अत: इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए फोन नं० 09419107788, 09419796949 अथवा 09419198451 पर तुरन्त सम्पर्क करें। **-भारतभूषण आनन्द, आश्रम प्रधान**

जल अमूल्य निधि है, इसका सोच-समझकर प्रयोग करें, क्योंकि जल है तो कल है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।